समकालीन महिला लेखन एवं स्त्री-विमर्श • डॉ. वसंत माळी, डॉ. गजाला वसीम

05-01-2016

Dr. Vasantkumar G. Mali
Research Guide in Hindi
Asaramji Bharadwaldar College,
Deogaon (R), Tq.Kannad,
Dist. Aurangabad (M.S.)
Mob. 9860623742

शोध-आलेख मेरे मार्गदर्शन में लिखा गया है।

समकालीन महिला लेखन एवं स्त्री-विमर्श

डॉ. वसंत कुमार गणपत माळी
डॉ. गजाला वसीम अब्दुल बशीर

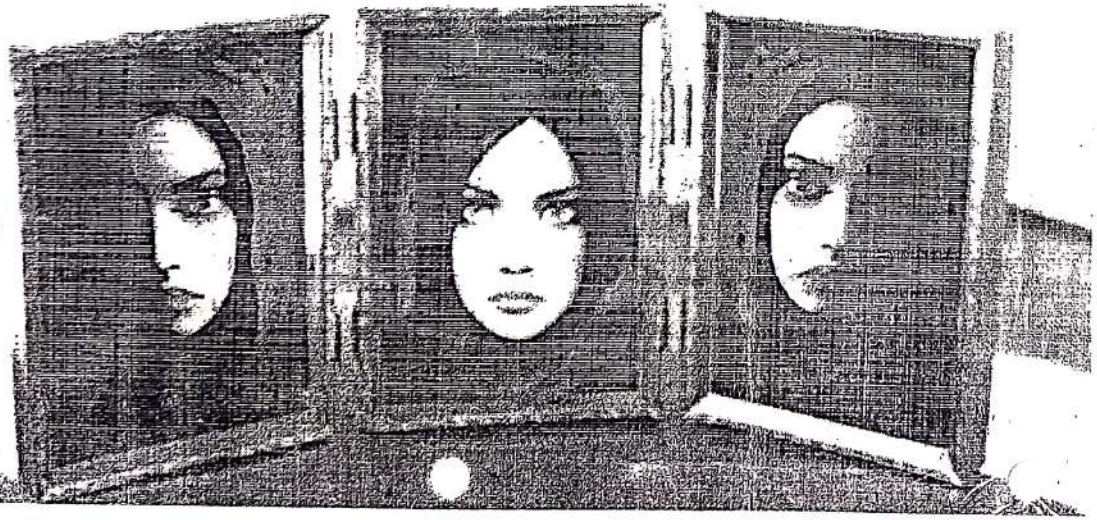

अनुक्रमणिका

1. समकालीन महिला लेखिकाओं के कथा साहित्य में नारी चेतना
2. मृदुला गर्ग के 'उसके हिस्से की धूप' उपन्यास में नारी चेतना
3. नारी जीवन का यथार्थ दस्तावेज 'कठगुलाब'
4. 'एक जमीन अपनी' उपन्यास में उभरती नारी चेतना
5. प्रभा खेतान के उपन्यास में नारी चेतना
6. मन्नू भंडारी की कहानियों में नारी चेतना
7. समकालीन महिला लेखिकाओं के कथा साहित्य में नारी चित्रण
8. शेष कादम्बरी में नारी चेतना
9. समकालीन हिंदी महिला लेखिकाओं के उपन्यासों में नारी की आर्थिक समस्याएँ
10. समकालीन महिला लेखन एंव नारी
11. समकालीन महिला लेखिकाओं के कथा साहित्य में नारी चेतना
12. सुधा अरोड़ा के उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन
13. मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में वैवाहिक नारी चेतना
14. मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों में कामकाजी नारी की समस्या
15. समकालीन हिंदी महिला लेखिकाओं के उपन्यासों में नारी चेतना
16. मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में नारी चेतना
17. चंद्रकांता के कथा-साहित्य में नारी चेतना
18. मृदुला गर्ग के उपन्यासों में चित्रित नारी अस्मिता
19. समकालीन हिंदी उपन्यासों में नारी चेतना
20. समकालीन महिला लेखिकाओं के कथा साहित्य में नारी चेतना
21. 21 वीं शती की हिंदी महिला लेखिकाओं के कथा साहित्य में नारी चेतना
22. समकालीन महिला लेखन में अनुभूति की ईमानदारी है, उधारी नहीं
23. समकालीन महिला लेखिकाओं के कथा साहित्य में नारी चेतना

Scanned with OKEN Scanner

संदर्भ–

1. डॉ. भुक्तरे बळीराम संभाजी–आधे–अधुरे एवं घासीराम कोतवाल का तुलनात्मक अध्ययन. पृ. स. 58–60
2. वही.पृ. स. 66
3. नरहर करुंपकर, आ. मराठी नाटक, आशय आणि आकृति बंध, पृ. स. 112
4. डॉ. भुक्तरे बी.एस., आधे अधुरे एवं घासीराम कोतवाल का तुलनात्मक अध्ययन. पृ. स. 86

– शोध–छात्र
नितीन रंगनाथ गायकवाड
इ.मेल. nitingaikwad73@gmail.com

●●

Scanned with OKEN Scanner

निश्कर्ष–

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि ओमप्रकाश वाल्मीकि के चर्चित कविता संग्रह 'बस्स! बहुत हो चुका' में कवि ने दलितों पर हुए अन्याय, अत्याचारों का सशक्त चित्रण प्रस्तुत करते हुए दलितों पर होने वाले अन्याय का चुप रहकर सहने का कठोर शब्दों में विरोध किया है। सदियों से दलित वर्ग के लोगों ने जो जीवन व्यतीत किया, दुःख, पीडा को भोगा उसकी प्रखर अभिव्यक्ति इस काव्यसंग्रह में हुई है। यह काव्य संग्रह दलितों के दुःख, वेदना की अभिव्यक्ति करता है। आलोच्य संग्रह की कविताएँ सदियों से दलितो के साथ घृणा, तिरस्कार, अन्याय, अत्याचार करने की मानसिकता के खिलाफ संघर्ष के लिए प्रेरित करने का काम करती है। अबतक जो वर्ग गुलामी में जीवन यापन करता था उसके अधिकारों की [illegible] कहीं है, साथ–साथ अत्याचार सहनेवाले दलितों की मानसिकता उजागर करने की सफल कोशिश की है। असल में यह कविता मानवधर्म को प्रतिष्ठापित करती है, मानवता प्रस्थापन के आड़ आनेवाली जातिव्यवस्था का वह कठोर शब्दों में खंडन करती है। कवि कहते हैं कि दलितों पर सवर्णों द्वारा जो अन्याय अत्याचार हुए हैं, उसे अब वे नहीं सहेंगे, बस्स! अब तक हमने बहुत सह लिया अब नहीं सहेंगे? वे दलितों को शिक्षित एवं संघटित होकर अपने अधिकारों के लिए संघर्ष के लिए प्रेरित करते हैं। आलोच्य काव्यसंग्रह का विषय, समाज में स्थित जातिव्यवस्था, सामाजिक विषमता, जाति के कारण उपेक्षा एवं शोषण के कारण की नहीं–नहीं अर्थों में जाँचपड़ताल के साथ–साथ लेखक की कुशल शब्द रचना के कारण ओमप्रकाश वाल्मीकि का 'बस्स! बहुत हो चुका' का हिंदी की दलित कविता में अपना अलग महत्त्व है।

संदर्भ–

1. दलित साहित्य का सौंदर्य शास्त्र–शरणकुमार लिंबाले, पृष्ठ–44
2. बस्स! बहुत हो चुका– ओमप्रकाश वाल्मीकि, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–1997 पृष्ठ–42
3. वहीं, पृष्ठ–34
4. वहीं, पृष्ठ–71
5. जूठन, ओमप्रकाश वाल्मीकि, पृ.12
6. बस्स! बहुत हो चुका– ओमप्रकाश वाल्मीकि, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–1997, पृष्ठ–80
7. वहीं, पृष्ठ–77
8. वहीं, पृष्ठ–28

३. इंद्र बहादुर सिंह की कविताओं में दलित चेतना

शोध छात्र - नितीन रंगनाथ गायकवाड

दलित साहित्य की शुरूवात होकर कई साल बीत गए है, फिर भी इस साहित्य से संबंधित कुछ अवधारणाओं को लेकर बार-बार प्रश्न उठाऐ जाते है। इस प्रकार के प्रश्न इस बात को प्रमाणित करते है कि इन अवधारणाओं को लेकर या तो हमारे बीच सहमति नहीं है अथवा अभी यह अवधारणाएँ स्थिर नहीं हो पायी है।

'दलित साहित्य' एक ऐसी अवधारणा है जिसे लेकर विवाद किया जाता रहा है। जो जन्मता दलित है, उसकी चेतना को हम दलित चेतना कहेंगे अथवा जो सामाजिक दृष्टि से पुर्णतः उपेक्षित है, जो शोषित है, पीड़ित है, श्रमिक है, आदिवासी है, जिनकी अपनी कोई पहचान नही बन पाई है और जिनके अस्थित्व को भी स्थापित वर्ग नकारता है, जिनकी आस्मिता को सतत रौंदा जाता है- वह दलित तथा इस [illegible] स्थिति के प्रति उनकी अपनी जो चेतना है वह दलित चेतना है।

इस वर्ण व्यवस्था और जाति व्यवस्था के विरोध में उस समय कई विद्वान जिनमें 'डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर', 'महात्मा जोतिबा फुले', 'न्यायमुर्ति रानडे', 'आगरकर', 'राजर्षि शाहु महाराज', 'बड़ौदा गायकवाड' आदि ने इस वर्ण व्यवस्था एवं जाति व्यवस्था का विरोध किया। दलित साहित्य सृजन के मूल में 'डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी की चिंतनधारा मुख्य रूप से काम कर रही है। डॉ. आंबेडकर दलित साहित्य के न केवल प्रेरणास्त्रोत है अपितु इस साहित्य का प्रस्थान बिंदु ही डॉ.आंबेडकर जी की विचारधारा है।

दलित चेतना या दलित अनुभूति का पहला विस्फोट मराठी में हुआ और वह 'कविता' तथा 'आत्मकथा' इन दो विधाओं में पूरी सशक्तता के साथ हुआ। जब इन मराठी रचनाओं के हिन्दी अनुवाद छपने लगे तो उससे प्रेरणा लेकर हिन्दी में दलित अनुभूति व्यक्त होने लगी। इस दृष्टि से 'ओमप्रकाश वाल्मीकि' की आत्मकथा 'जूठन' का अत्याधिक महत्व है। हिन्दी में दलित साहित्य की शुरूवात इसी कृति से मानी जाती है। यह दूसरी बात है कि कुछ आलोचक 'हीरा डोम' को पहला दलित कवि मानते है, जिनका भोजपूरी में एक गीत 'अछुत की शिकायत' नाम से सरस्वती पत्रिका में छपा। हिन्दी में दलित साहित्य का सृजन आठवें तथा नौंवे दशक से होने लगा। 'ओमप्रकाश बाल्मीकि', 'श्योराजसिंह बैचेन', 'डॉ. सुखवीर सिंह', 'डॉ.चंद्रकांत बराठे', 'डॉ. दयानंद बटोहीं', 'डॉ. सुमनपाल', 'कुसुम वियोगी', 'डॉ. सी.वी. भारती', 'सुशील टाक' आदि इस धारा के प्रमुख कवि है। इन सभी रचनाकारों में डॉ. इंद्र बहादुर सिंह का स्थान भी कम नहीं है।

दलित लेखकों एवं कवियों ने भागवत्वादी कला की कसौटियों और सौंदर्यशास्त्र को नकारकर बौद्धवादी, अंबेडकरवादी जीवन दर्शन के आधार पर

अलग सौदर्यशास्त्र की रचना की, जिसमें मूल तत्व-स्वतंत्रता, समता, बंधुत्व व न्याय..... है। इन तत्वों का आधार लेकर 'डॉ. इंद्र बहादुर सिंह' ने काव्य रचना की

इंद्र बहादुर सिंह बहुमूखी प्रतिभा के जनवादी कवि, समिक्षक एवम् विचारक है। वे दलित-दमित वर्ग की लड़ाई साहित्य के माध्यम से विगत तीन-चार दशको से लड़ते आ रहे है। वे न केवल दलित, अपितु आदिवासी साहित्य के विचारक है। उनके प्रति प्रो. दामोदर मोरे जी ने लिखा है- "दलित आदिवासी चेतना के शिल्पी इंद्र बहादुर सिंह अपनी आँखों को दूसरों के सपनो से जोड़नेवाले कवि है। उन्होंने अपनी सोच, अपनी जाति तक सीमित नहीं रखी, न तो अपनी इंसानियत को वर्ण व्यवस्था के पैरो तले कुचलने दिया। इसी से उनकी संवेदना तेज-तर्रार है। दलित आदिवासीयों की वेदना उनके मन को छुती है। उनके उत्पीड़न से वे मर्माहत होकर लिखते है।"[१]

इंद्र बहादुर सिंह की रचनाओं की ओर देखा जाय तो 'विकलांग सदी', 'आईना टुटा है मन का', 'पलाश-वन', 'इतिहास का नया पथ', 'दहकते अंगारे', 'सुनहले भविष्य के लिए', 'रिश्तों की पहचान', 'नए क्षितिज की तलाश' आदि महत्वपुर्ण माने जाते है। इन काव्य-संग्रह के माध्यम से उन्होंने दलित-जन के गीत लिखने का, शासन-सत्ता से टकराने का, विद्रोह और क्रांति का गीत गाने का संकल्प किया। 'विकलांग सदी' की कुछ पंक्तियाँ देखिए-

"साँस-साँस हर कदम, सता रही है फिक्र एक।
घिरे हैं अंधकार से, प्रकाश की तलाश में।।..
दम-ब-दम तड़प रही, ज़िंदगी ज़हान की
अम्ज का हरेक लफ़्ज़, बना ख़ौफनाक राज
कब तक रहेंगे चुप, नाक तक सहे सितम
शहीद मुफ़लिसे अवाम, सरफ़रोश सुबहे शाम
तख्ते-ज़िंदगी के नाम हैं बेकफ़न, बेवतन
माँगता जवाब आज, होशियार नवजवान
गरेबान झाँक ले, सोचकर जवाब दे
सुखों के ख्वाब क्या हुए, वायदे किधर गये
साँस-साँस का जनाब, हिसाब आज चाहिए
खड़ा द्वार इंक़लाब, बजा रहा है साँकले।।"[२]

डॉ. इंद्र बहादुर सिंह की सृजन-धर्मिता से सामाजिक दलित प्रतिबद्धता का हसास होता है। इनकी कविताओं में काव्य-दृष्टि साफ-साफ दिखाई देती है। शोषण के वरूद्ध चल रहे आंदोलन में अपने-आप को और अपनी कविताओं को अलग-अलग नहीं रखता। जिस कविता में सामाजिक प्रतिबद्धता नहीं है, वह कविता दलितों के मन को छुती नहीं। इंद्र बहादुर सिंह के मन में दलितों के प्रति करूणा का भाव है, इसी से उनकी कविता में सामाजिक प्रतिबद्धता की गूँज अपने चरम पर सुनाई देती

ISBN No. 978-93-83171-22-4

है। ऐसी करूणा दलितों के प्रति बुद्ध में भी पाई जाती है। उत्पीड़ित समाज के उत्थान की भावना जहाँ सशयत रूप में अभिव्यक्त होती है, यहीं पर दलित सौंदर्य भी अपने चरम रूप में दिखाई पड़ता है। डॉ. सिंह का रचना साहित्य बहुतांश दलित-जीवन के सुख-दुःख से जुड़ा हुआ है। आज भी गाँवों में दलितों पर अत्याचार होते है, उनके घर जलाये जाते है, दलित स्त्रियों पर अत्याचार किये जाते है। इन सब बातों पर अंकुश लगे यही धारना रखकर डॉ. सिंह ने कविताओं में दलित संवेदना को स्थान दिया।

"...करता एहसास सारा गाँव
अलग-अलग है घाट
अलग-अलग है ठाँव
मत्स्यान्याय का पलड़ा पड़ता भारी
'मनु' के लोकतंत्र में पिसते कमजोर...
जिनके पास सब कुछ है, वे चाहते हैं और
जिसके पास कुछ भी नहीं, उनकी चाहत
समर्थ को पहुँचाती चोट और आगे भी पहुँचाएगी"[३]

डॉ. इंद्र बहादुर सिंह की यह एक लंबी कविता हे। इसमें दलित-जीवन का सामाजिक एवम् आर्थिक दोनों पहलुओं का बड़ा मार्मिक चित्रण हुआ है। 'मनुवादियों' के लोकतंत्र में जो दलित है, कमजोर है, ये बराबर पीस रहे है। समाज का प्रभु वर्ग जिसके पास सब कुछ है वे और चाहते है और जिसके पास कुछ नहीं है, उनकी चाहत समर्थ प्रभु वर्ग को चोट पहुँचाती है और आगे भी पहुँचाएगी। इस कविता में बिहार के दलित-संघर्ष को केंद्र में रखा गया है।

आज जिस आरक्षण को लेकर सवर्ण और दलितों में बात-बात पर विवाद होता है, वह आरक्षण किसी की मेहरबानी नहीं, अपितु गाँधी-अंबेडकर के पूना समझौते की प्रमुख शर्त हैं। इसे स्पष्ट करते हुए डॉ. सिंह लिखते है-

"दान, दया, भिक्षा नहीं है आरक्षण अधिकार।
यह गाँधी, अंबेडकर, पूना पैक्ट करार।।
अंख-पंख सब कट गये, एक-एक सब अंग।
आरक्षण को कर दिया, निष्प्रभाव अरू पंग।।[४]

की अवधारणा को ही सामने रखती है। इस पुस्तक से ज्ञात होता है कि वर्ग-संघर्ष के लिए जाति का विनाश जरूरी है। आज के समय दलितों के बढ़ते वर्चस्व को देखकर सवर्णो में खलबली मच गयी है। इसलिए दलित वर्ग के विरूद्ध वे विभिन्न षड़यंत्र रचते है और दलित उस षड़यंत्र के शिकार होते रहते है। कवि सिंह बड़े ही व्यंग्यात्मक ढंग से इस तथ्य पर प्रकाश ड़ालते हुए लिखते है-

"पंडित विष्णु..। तुम बनते बड़े चालाक हो
एकलव्य की तपस्या व आराधना का सारा फल

ISBN No. 978-93-83171-22-4

Scanned with OKEN Scanner

तुम चाहते हो। तुम..बहुत दिनों से प्रतीक्षारत् थे
कि गुरू तुम्हें आशिर्वाद देकर वृहस्पति और शुक्राचार्य बना देंगे
मगर गुरू के अँगूठा माँगने पर तुम तिलमिला गये"[५]

इस बदलते परिवेश में रिश्तों की सही पहचान जरूरी हो गई है। आज जरूरत है कि दलित वर्ग भी तत्वरित लोभ-मोह से उपर उठकर विचार करें कि कौन अपना है और कौन पराया?

निष्कर्ष:

आज हम दलित चेतना से सहमत हों या असहमत, किन्तु दोनों ही परिस्थितियों में इसमें जनमानस को इतना अधिक प्रभावित किया है कि यह साहित्य की सभी विधा में अभिव्यक्त हुई है, साथ-ही-साथ सामाजिक-राजनीतिक परिप्रेक्ष में दलित साहित्य ने अपना विशेष स्वरूप ग्रहन किया है। डॉ.इंद्र बहादुर सिंह कि हर कविता अपने-आप में एक नयि दलित चेतना को उभारती है। इनकी कविताओं में दलित-दमित वर्ग के शोषन का चित्रण तो है ही साथ-ही-साथ दलित वर्ग को संकेत भी देती है कि इस आधुनिक समाज में अपने और पराये को समझने की, उसे महसुस करने की आवश्यकता को समझाती है। इसलिए दलित साहित्य में डॉ. इंद्र बहादुर सिंह के कविताओं का महत्व नकारा नहीं जा सकता।

संदर्भ:

१) 'पलाश-वन', डॉ.इंद्र बहादुर सिंह, सं. डॉ.अजीत कुमार रांय, भूमिका, पृ.सं.५
२) 'विकलांग सदी', डॉ. इंद्र बहादुर सिंह, सं. देवेंद्र सिंह गहरवार, पृ.सं.७९-८०
३) 'इतिहास का नया पथ', डॉ. इंद्र बहादुर सिंह, पृ.सं. ५४
४) 'पलाश-वन', डॉ. इंद्र बहादुर सिंह, पृ.सं. १०७
५) 'रिश्तों की पहचान', डॉ. इंद्र बहादुर सिंह, पृ.सं. ७७

ISBN No. *978-93-83171-22-4*

Scanned with OKEN Scanner